प्रार्थना है समर्पण का भाव

प्रश्न : प्रार्थनाएं परिणाम न लाएं तो क्या करें?

पहली बात, परिणाम की जब तक आकांक्षा है, तब तक प्रार्थना पूरी न होगी। या यूं कहो : परिणाम की जब तक आकांक्षा है, परिणाम न आएगा। प्रार्थना तो शुद्ध होनी चाहिए, परिणाम से मुक्त होनी चाहिए, फलाकांक्षा से शून्य होनी चाहिए। कम से कम प्रार्थना तो फलाकांक्षा से शून्य करो।

कृष्णा तो कहते हैं कि दुकान भी फलाकांक्षा से शून्य होकर करो; युद्ध भी फलाकांक्षा से शून्य होकर लड़ो। तुम कम से कम इतना तो करो कि प्रार्थना फलाकांक्षा से मुक्त कर लो। कम से कम प्रार्थना को तो पवित्र रहने दो। उस पर तो पत्थर न रखो फलाकांक्षा के। फलाकांक्षा के पत्थर रख दोगे, प्रार्थना का पक्षी न उड़ पाएगा। तुमने शिला बांध दी पक्षी के गले में।

अब तुम पूछते हो : 'प्रार्थनाएं परिणाम न लाएं तो क्या करें?'

परिणाम लाएगी ही नहीं प्रार्थनाएं, जब तक परिणाम की आकांक्षा है। प्रार्थनाएं जरूर परिणाम लाती है, मगर तभी लाती है जब परिणाम की कोई आकांक्षा नहीं होती। यह विरोधाभास तुम्हें समझाना ही होगा। यह धर्म की अंतरंग घटना है। यह उसका राजों का राज है। जिसने मांगा, वह खाली रह गया; और जिसने नहीं मांगा, वह भर गया।

तुम्हारी तकलीफ समझता हूं, क्योंकि प्रार्थना हमें सिखाई ही गई है मांगने के लिए। जब मांगना होता है कुछ, तभी लोग प्रार्थना करते हैं, नहीं तो कौन प्रार्थना करता है? लोग दुख में याद करते हैं परमात्मा को, सुख में कौन याद करता है? और संतों ने कहा है : जो सुख में याद करे, उसे मिल जाए। मगर सुख में याद करने का मतलब ही यही होता है कि अब कोई आकांक्षा नहीं होगी। सुख तो है ही, अब मांगना क्या है?

जब सुख में कोई प्रार्थना करता है तो प्रार्थना केवल धन्यवाद होती है। जब दुख में कोई प्रार्थना करता है तो प्रार्थना में एक भिखमंगापन होता है। सम्राट से मिलने चले हो भिखारी

होकर, दरवाजों से ही लौटा दिए जाओगे। पहरेदार ही भीतर प्रवेश न होने देंगे। सम्राट से मिलने चले हो, सम्राट की तरह चलो। जरा सम्राट की चाल चलो!

जब दुख में कोई प्रार्थना करता है तो प्रार्थना में एक भिखमंगापन होता है। सम्राट से मिलने चले हो भिखारी होकर, दरवाजों से ही लौटा दिए जाओगे। पहरेदार ही भीतर प्रवेश न होने देंगे। सम्राट से मिलने चले हो, सम्राट की तरह चलो। जरा सम्राट की चाल चलो

सम्राट की चाल क्या है? न कोई वासना है, न कोई आकांक्षा है; जीवन का आनंद है और आनंद के लिए धन्यवाद है। जो दिया है वह इतना है, और क्या मांगना है? बिना मांगे इतना दिया है। एक गहन कृतज्ञता का भाव—वहीं प्रार्थना है।

मगर तुम्हारी अड़चन मैं समझा। बहुतों की अड़चन यही है। अधिक की अड़चन यही है। प्रार्थना पूरी नहीं होती तो शक होने लगता है परमात्मा पर। कैसा मजा है। प्रार्थना पर शक नहीं होता—कि मेरी प्रार्थना में कोई गलती तो नहीं हो रही? परमात्मा पर शक होने लगता है।

मेरे पास लोग आकर कहते हैं कि प्रार्थना तो पूरी होती ही नहीं है हमारी, जनम-जनम हो गए! तो परमात्मा है भी या नहीं?

परमात्मा पर शक होता है। देखना मजा! अपने पर शक नहीं होता—कि मेरी प्रार्थना में कहीं कोई भूल तो नहीं? नाव ठीक नहीं चलती तो मेरी पतवारें गलत तो नहीं हैं? दूसरा किनारा है या नहीं, इस पर शक होने लगता है।

मगर ध्यान रखो, जिस नदी का एक किनारा है, दूसरा दिखाई पड़े या न दिखाई पड़े, होगा ही, है ही। कोई नदी एक किनारे की नहीं होती। उस दूसरे किनारे का नाम निर्वाण है, इस किनारे का नाम संसार है। संसार और निर्वाण के किनारों के बीच जीवन की यह अंतःसलिला, यह गंगा बह रही है। लेकिन, अगर तुम ठीक से नाव न चलाओ तो दूसरा किनारा कभी न आएगा।

फकीर हुआ बायजीद। उसके एक शिष्य ने पूछा कि मैं सब उपाय करता हूं, लेकिन अकारथ जाते हैं। परमात्मा है भी, यह मुझे संदेह होने लगा है। जानते हो बायजीद ने क्या किया? अपने शिष्य को साथ लिया, कहा : मेरे साथ आ, झील पर चल। रात प्यारी है, पूरा चांद है, झील पर थोड़ी नौका भी चलाएंगे और तेरे प्रश्न का उत्तर भी हो जाएगा।

बायजीद नाव में बैठा, पतवार उठाई। नाव चलानी हो तो दोनों पतवारें चलानी होती है; एक ही पतवार से चलाने लगा। नाव गोल-गोल चक्कर काटने लगी। अब एक ही पतवार से चलाओगे तो नाव गोल-गोल चक्कर काटेगी ही। नाव जा नहीं सकती उस किनारे। शिष्य हंसने लगा। उसने कहा : आप यह क्या कर रहे हैं? आप क्या मजाक कर रहे हैं? ऐसे तो हम उस किनारे कभी न पहुंचेंगे।

बायजीद ने कहा : तुझे उस किनारे पर शक आता है या नहीं?

उसने कहा : उस किनारे पर कैसे शक आए? किनारा तो है। जब यह किनारा है तो वह किनारा भी है। कोई नदी, कोई झील एक किनारे पर होती है? दूसरा किनारा भी है। शक का सवाल ही नही है दूसरे किनारे पर। आप एक पतवार से नाव खेने की कोशिश कर रहे हैं, इसलिए नाव चक्कर काटती रहेगी, गोल चक्कर काटती रहेगी। नाव एक दुष्चक्र हो जाएगी।

बायजीद ने दूसरी पतवार भी उठा ली। अब नाव चलने लगी, अब तीर की तरह चलने लगी। बायजीद ने कहा कि मैं तुझे यह कहना चाहता हूं कि तू अभी परमात्मा की तरफ जाने की जो चेष्टा कर रहा है, वह आधी-आधी है। एक ही पतवार से चलाने की कोशिश हो रही है। आधा मन तेरा इस किनारे से उलझा है, आधा मन उस किनारे जाना चाहता है। तू आधा-आधा है। तू कुनकुना-कुनकुना है। इसी से अड़चन हो रही है। और हमें यही सिखाया गया है—कुनकुनी जिंदगी।

अब तुम प्रार्थना भी करने गए, उसमें भी वासना डाल दी, बस आधा-आधा हो गया। यह आधा-आधापन छोड़ो। वासना करनी हो तो पूरी वासना करो। तो पूरी वासना भी कल्याणदायी है, मंगलदायी है। प्रार्थना करनी हो तो पूरी प्रार्थनी करो। तो पूरी प्रार्थना भी मंगलदायी है।

लज्जते-काम और तेज करो
तल्खि-ए-जाम और तेज करो
जेरे-दीवार आंच कम-कम है
शोला-ए-बाम और तेज करो
उस तपिश को जो खूं रुलाती है
सहर-ओ-शाम और तेज करो
पए-तक्मीले-पुख्ताकारि-ए-शौक
हवसे-खाम और तेज करो
हम पे हो जाए खत्म नाकामी
सई-ए-नाकाम और तेज करो
जादा खुद भी है साजिशे-खमों-पेच
साजिशे-गाम और तेज करो
सुस्त-गामी हमें पसंद नहीं

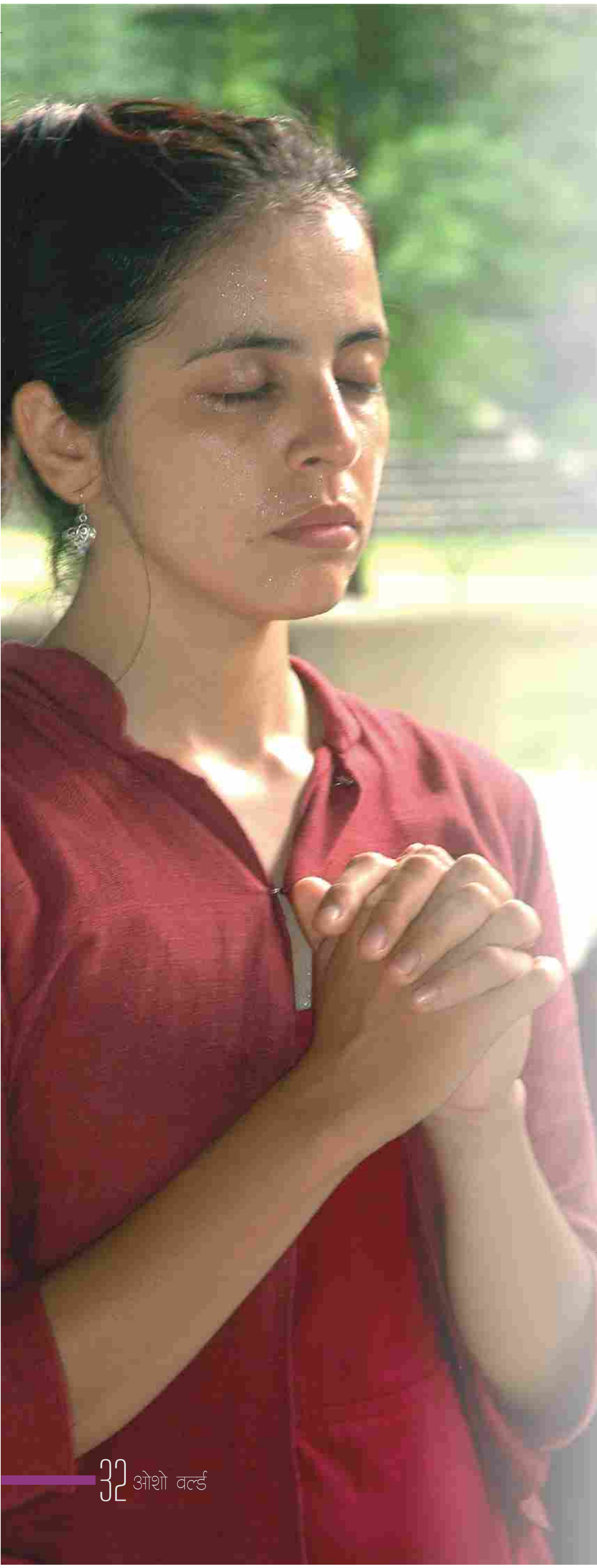

रक्से-अय्याम और तेज करो
गर्दिशे-वक्त ले न डूबे कहीं
गर्दिशे-जाम और तेज करो
'अख्तर' अपने मजाके-शेरी में
रंगे-खय्याम और तेज करो

तेजी लाओ। समग्रता लाओ।

लज्जते-काम और तेज करो

इच्छा के स्वाद को और तेज करो, अगर इच्छा करनी है।

तल्खि-ए-जाम और तेज करो

अगर मंदिरा ही पीने चले हो तो ढालो और। डरो मत अब मदिरा के तिक्त स्वाद से।

तल्खि-ए-जाम और तेज करो
पए-तक्मीले-पुख्ताकारि-ए-शौक

उन्माद की परिपक्वता के लिए...पागलपन पूरा होना चाहिए। उसकी भी एक प्रौढ़ता होती है।

पए-तक्मीले-पुख्ताकारि-ए-शौक
हवसे-खाम और तेज करो

यह कच्ची लोलुपता से नहीं चलेगा। अगर वासना करनी है तो पूरी; और प्रार्थना करनी है तो पूरी।

सुस्त-गामी हमें पसंद नहीं

ऐसे क्या धीरे-धीरे चलना? ऐसे क्या एक टांग इधर, एक टांग उधर! एक पंख इधर, एक पंख उधर!

सुस्त-गामी हमें पसंद नहीं
रक्से-अय्याम और तेज करो

समय के नृत्य को और तेज करो।

गर्दिशे-वक्त ले न डूबे कहीं
गर्दिशे-जाम और तेज करो

समय चूका जा रहा है, जल्दी करो! तेजी लाओ!

'अख्तर' अपने मजाके-शेरी में
रंगे-खय्याम और तेज करो

और एक अपूर्व घटना घटती है जब कोई भी चीज अपनी परिपूर्णता पर होती है, अपनी पूरी त्वरा पर। सौ डिग्री पर जब पानी उबलता है तो भाप बन जाता है। किसी भी चीज को तुम सौ डिग्री पर ले आओ, और तुम्हारा अहंकार तिरोहित होने लगेगा। और जहां अहंकार तिरोहित होता है, वहीं प्रार्थना है।

मयकदा था, चांदनी थी, मैं न था
इक मुजस्सम बेखुदी थी, मैं न था
इश्क जब दम तोड़ता था, तुम न थे
मौत जब सर धुन रही थी, मैं न था

तूर पर छेड़ा था जिसने आपको
वो मेरी दीवानगी थी, मै न था
वो हसीं बैठा था जब मेरे करीब
लज्जते-हमसायगी थी, मैं न था
मयकदे के मोड़ पर रुकती हुई
मुद्दती की तश्नगी थी, मैं न था

जब प्यास पूरी होती है, तुम नहीं होते फिर।

मयकदे के मोड़ पर रुकती हुई
मुद्दतों की तश्नगी थी, मैं न था

जन्मों-जन्मों की प्यास इकट्ठी करो। वही मुड़े, वही जाए मधुशाला में, तुम नहीं जाना!

मयकदा था, चांदनी थी, मैं न था

मधुशाला हो, चांद हो, चांदनी हो, लेकिन तुम नहीं—बस उसी घड़ी संक्रांति का क्षण आ गया।

वो हसी बैठा था जब मेरे करीब
लज्जते-हमसायगी थी, मैं न था

तुम हो, उससे ही आकांक्षाएं उठती हैं, मांगें उठती हैं, अपेक्षाएं उठती हैं। और जहां अपेक्षा है, वहां प्रार्थना कभी पूरी नहीं होती।

तुम पूछते हो : 'प्रार्थनाएं परिणाम न लाएं तो क्या करें?'

अड़चन तुम्हारी साफ है। तुम्हारी अकेले की नहीं, करीब-करीब सारी दुनिया की अड़चन यही है। परिणाम की आकांक्षा जाने दो। सिर्फ प्रार्थना करो। प्रार्थना अपने में ही अपना लक्ष्य है। नहीं तो रोओगे। नहीं तो सदा पछताओगे। और धीरे-धीरे रोते-रोते ईश्वर पर संदेह पैदा होगा। आखिर आदमी की सामर्थ्य है झेलने की, धैर्य की!

काम आ सकें न अपनी वफाएं तो क्या करें
इक बेवफा को भूल न जाएं तो क्या करें
मुझको यह ऐतिराफ दुआओं में हैं असर
जाएं न अर्श पर जो दुआएं तो क्या करें
इक दिन की बात हो तो उसे भूल जाएं हम
नाजिल हों दिल पर रोज बलाएं तो क्या करें
जुल्मत-बदोश है मेरी दुनिया-ए-आशिकी
तारों की मशअलें न चुराएं तो क्या करें
शब भर तो उनकी याद में तारे गिना करें
तारे से दिन को भी नजर आएं तो क्या करें
अहदे-तरब की याद में रोया किए बहुत
अब मुस्कुरा के भूल न जाएं तो क्या करें
अब जी में है कि उनको भुला कर ही देख लें
तो बार-बार याद जो आएं तो क्या करें
वादे के ऐतिबार में तिस्कीने-दिल तो है

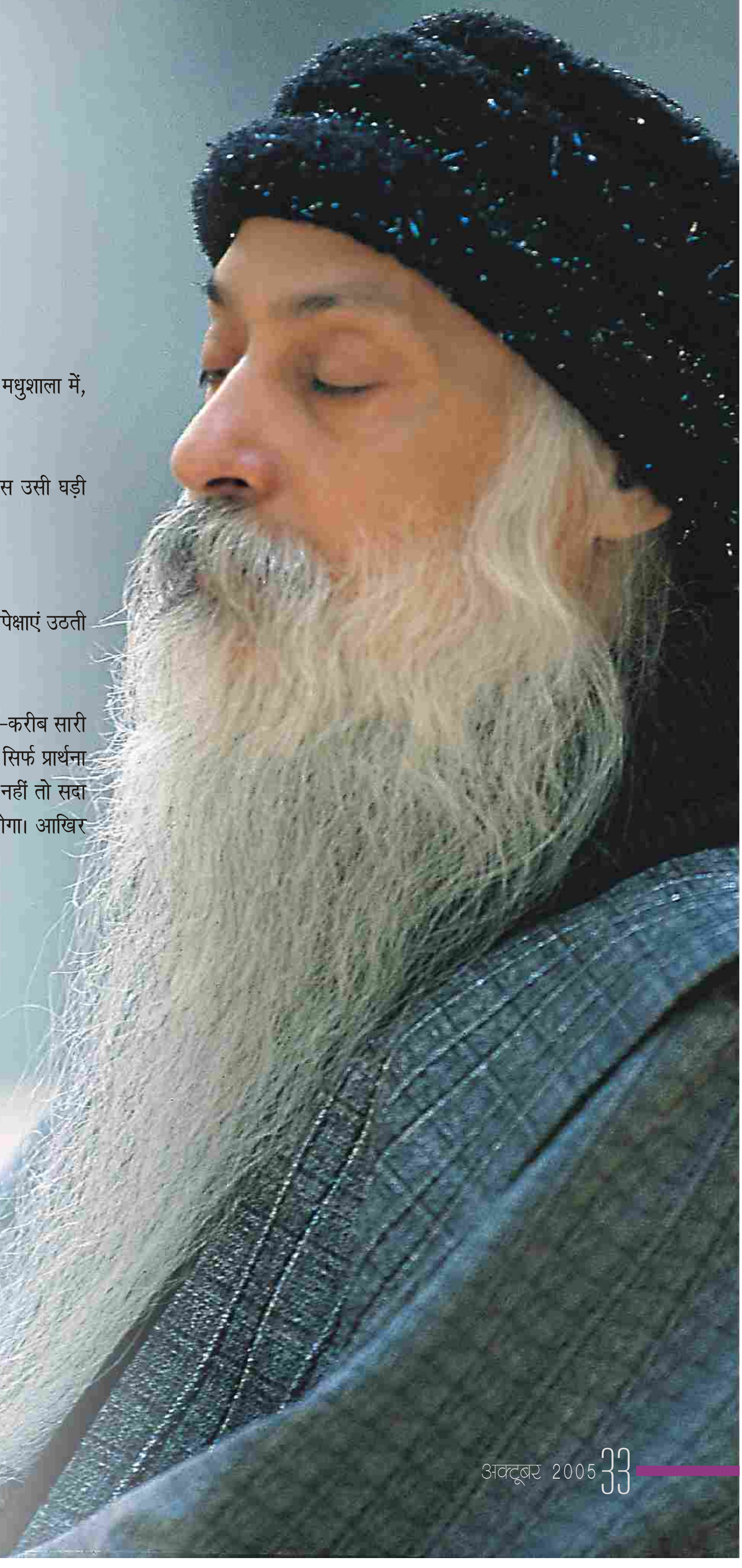

परिणाम की आकांक्षा जाने दो। सिर्फ प्रार्थना करो। प्रार्थना अपने में ही अपना लक्ष्य है। नहीं तो रोओगे। नहीं तो सदा पछताओगे। और धीरे-धीरे रोते-रोते ईश्वर पर संदेह पैदा होगा। आखिर आदमी की सामर्थ्य है झेलने की, धैर्य की

अब फिर वहीं फरेब न खाएं तो क्या करें
तर्के-वफा भी जुर्मे-मोहब्बत सही 'अख्तर'
मिलने लगे वफा की सजाएं तो क्या करें

अड़चन आएगी। मांगोगे तो अड़चन आएगी। तो सवाल उठेगा—

काम आ सकें न अपनी वफाएं तो क्या करें
इक बेवफा को भूल न जाएं तो क्या करें
मुझको यह ऐतिराफ दुआओं में हैं असर
जाएं न अर्श पर जो दुआएं तो क्या करें

अगर आकाश तक न पहुंचती हो तुम्हारी प्रार्थनाएं तो प्रश्न उठेगा। मगर जरा अपनी प्रार्थनाओं का गला देखो! उनमें तुमने बहुत बड़े-बड़े पत्थर बांध दिए है। आकाश तक उड़ने की क्षमता ही तुमने छीन ली है। पत्थर उड़ नहीं सकते।

मांगें वजनी हैं, क्योंकि मांगें सभी पार्थिव हैं। जो भी तुम मांगोगे, वहीं पार्थिव होगा, छोटा होगा, ओछा होगा। मांगोगे ही क्या? धन मांगोगे, पद मांगोगे, स्वास्थ्य मांगोगे, लंबी उम्र मांगोगे, सुंदर स्त्री मांगोगे, पुरुष मांगोगे, बेटे मांगोगे, धन मांगोगे—क्या मांगोगे? ये सब छोटी पार्थिव बातें हैं। ये सब चट्टाने हैं। गला घुट जाएगा प्रार्थना का। फिर नहीं आकाश तक तुम्हारी प्रार्थनाएं पहुंच पाएगी।

मांग को जाने दो और फिर देखो मजा! मांग को छोड़ो और फिर देखो मजा! इधर प्रार्थना की नहीं कि उधर पहुंची नहीं। प्रार्थना करते-करते ही पूरी हो जाती है। प्रार्थना उठते-उठते ही ऐसा अमृत बरसा जाती है। उस क्षण में द्वार खुल जाते हैं रहस्यों के। तुम मिट जाते हो, परमात्मा ही होता है।

पूछते हो : 'क्या करें?'

फिर-फिर करो प्रार्थना, और-और करो प्रार्थना। अब परिणाम छोड़ कर करो।

किए आरजू से पैमां, जो मआल तक न पहुंचे
शब-ओ-रोज-आशनाई, मह-ओ-साल तक न पहुंचे
वह नजर बहम न पहुंची कि मुहीते-हुस्न करते
तेरी दीद के वसीले खद-ओ-खाल तक न पहुंचे
वही चश्मा-ए-बका था, जिसे सब सराब समझे
वही ख्वाब मोतबर थे, जो खयाल तक न पहुंचे
तेरा लुत्फ वज्हे-तस्की, न करारे-शरहे-गम से
कि है दिल में वो गिले भी, जो मलाल तक न पहुंचे
कोई यार जां से गुजरा, कोई होश से न गुजरा
ये नदीमे-यक-दो-सागर, मेरे हाल तक न पहुंचे
चलो 'फैज' दिल जलाएं, करें फिर से अर्जे-जानां
वह सुखन जो लब तक आए, पे सवाल तक न पहुंचे

क्या करें, पूछते हों!

चलो 'फैज' दिल जलाएं, करें फिर से अर्जे-जानां

उस प्यारे को फिर पुकारें, फिर दिल जलाएं। फिर प्राणों की आरती बनाएं। उस प्रियतम से फिर प्रार्थना करें। मगर अब परिणाम नहीं। अब प्रार्थना अपने में लक्ष्य हो।

चलो 'फैज' दिल जलाएं, करें फिर से अर्जे-जानां
वह सुखन जो लब तक आए, पे सवाल तक न पहुंचे

प्रार्थना शब्दों में नहीं होती। तुम्हारे आंतरिक शून्य का ही दूसरा नाम प्रार्थना है। प्रार्थना में झुक जाते हो तुम। कहने को क्या बचता है? कहने को क्या है? शब्द छोटे हैं, प्रार्थना समाएगी कैसे शब्दों में? न तो मांग होती है, न शब्द होते हैं—एक समर्पण का भाव होता है। एक अर्पित दशा होती है। एक झुकना होता है। उस झुकने में ही सब पाना हो जाता है।

चूकते रहोगे, जब तक मांगते रहोगे। अब मांग छोड़ो। अब जरा मांग छोड़ कर देखो। जरा इस प्रार्थना का भी स्वाद लो जो मैं तुमसे कह रहा हूं!

चलो 'फैज' दिल जलाएं, करें फिर से अर्जे-जानां
वह सुखन जो लब तक आए, पे सवाल तक न पहुंचे

फिर से पुकारें। फिर प्रार्थना करें। नई तर्ज सीखें प्रार्थना की, नई शैली अपनाएं।

प्रार्थना प्रार्थना के निमित्त, बस फिर प्रार्थना में कोई रुकावट नहीं है। फिर प्रार्थना ही परमात्मा हो जाती है।

– ओशो
बिरहिनी मंदिर दियना बार
छठा प्रवचन, आखिरी प्रश्न
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)